International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

“राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 एवं शिक्षणप्रणाली”

डॉ. दिनेश कुमार यादव
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Article Info
Volume 9, Issue 6
Page Number : 869-872

Publication Issue
November-December-2022

Article History
Accepted : 15 Nov 2022
Published : 22 Dec 2022

शोधलेख सारांश-
भारतवर्ष के मूल में उसकी अस्मिता, निष्ठा एवं कर्तव्य को पोषित, पल्लवित करने का श्रेय भारतीय शिक्षा को ही जाता है, जिसने ज्ञान के स्रोत के रूप में मानव का मार्ग सदा प्रशस्त किया है। समयानुकूल शिक्षा के उद्देश्य भी परिवर्तित होते हैं। वह शिक्षा आज **“सर्वांगीण विकास”** की सूत्रधार के रूप में हमारे समक्ष समुपस्थित है। विविध शिक्षण प्रणालियां आज शिक्षा को पुष्ट करने हेतु उपलब्ध हैं, जिनके आश्रयण से एक शिक्षक अपने कर्म पथ पर अग्रसर होता है।
आज आवश्यकता है शिक्षकों द्वारा समय की आवश्यकतानुसार समाज को सुदृढ़ता देने वाले मूल्यवान नागरिकों के निर्माण में सक्षम शिक्षा प्रणालियों के आश्रयण की, जो बच्चों को उपयुक्त दिशा प्रदान कर सकें।
मुख्य शब्द - विद्या, ज्ञान, शिक्षा, सर्वांगीण विकास, शिक्षण, शिक्षण प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 ।

अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

भारतवर्ष के मूल में उसकी अस्मिता, निष्ठा एवं कर्तव्य को पोषित, पल्लवित करने का श्रेय यदि किसी उपादान को दिया जा सकता है, तो वह निश्चित रूप से भारतीय शिक्षा ही है, जिसने प्राचीन वांग्मय को परिभाषित करने के साथ ही इहलोक एवं पारलौकिक ज्ञान के स्रोत के रूप में मानव के प्राणीमात्र से एक सामाजिक मनुष्य बनने का मार्ग सदा सर्वदा प्रशस्त किया है। शिक्षा ज्ञान के स्थापन, विस्तार एवं विश्लेषण हेतु सबल माध्यम है। जीवनोपयोगी जानकारियों के साथ ही **आधुनिक युग की आवश्यकताओं की पूर्ति का सन्दर्भ भी कहीं न कहीं शिक्षा से ही जुड़ा है।**

शिक्षा-

विभिन्न कालों के परिदृश्य के आलोडन से यह ज्ञात होता है कि समयापेक्षा से शिक्षा के अर्थों व उद्देश्यों में आंशिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन काल में जो शिक्षा **"सा विद्या या विमुक्तये"** के अर्थों को पोषित करते हुए मुक्ति मार्ग के प्रमुख साधन के रूप में प्रयुक्त थी, उसने कालांतर में **"मनुष्य को जीवन जीने का सलीका सिखाने"** के रूप अपने उद्देश्यों में आंशिक परिवर्तन किया। आज के युग के दार्शनिकों, चिंतकों, मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाविदों के विचारों के अध्ययनोपरांत यह

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ज्ञात होता है कि वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा **"अन्तर्निहित शक्तियों का विकास"** करने के साथ ही बालक के **"सर्वांगीण विकास"** की सूत्रधार के रूप में हमारे समक्ष समुपस्थित है।

शिक्षण-

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षण से तात्पर्य उन सभी प्रकार की शिक्षण गतिविधियों से है जिन्हें वास्तविक शिक्षण अधिगम परिस्थितियों में एक शिक्षक द्वारा अपने विद्यार्थियों को साथ लेकर संपन्न किया जाता है। शिक्षण में उस प्रक्रिया का समावेश होता है जिसके माध्यम से शिक्षण उद्द्देश्यों की प्राप्ति संभव हो जाती है।

प्राचीनकाल में जो गुरुकुलों, मठों, मकतब व मदरसों के उन्मुक्त वातावरण में गुरुमुख से अनुभवजन्य ज्ञान प्रदान करते हुए उसका प्रायोगिक पक्ष भी समाज की वास्तविक परिस्तिथियों में ही सम्पादित करवाने की शिक्षण व्यवस्था थी, उसने भी आधुनिक युग में आते आते अपने आप में आमूलचूल परिवर्तन कर लिया। अब शिक्षण उन्मुक्त वातावरण से चारदीवारी के निश्चित वातावरण में विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के स्वरूप में आने के बाद उससे भी कहीं आगे निकल गया है। लेकिन यह सर्वकालिक सत्य है कि शिक्षा व्यक्तिगत उद्देश्यों के बंधनों से ऊपर समजापेक्ष क्रिया है, जिसका प्रमाण हम आज भी विद्यालयों के मुख्य द्वारों पर लिखी- **"ज्ञानार्थ प्रवेश - सेवार्थ प्रस्थान"** पंक्तियों में खोज सकते हैं। देखा जाए तो आज किसी के भी- कभी भी- कहीं से भी शिक्षा प्राप्त करने की यात्रा हमने पूर्ण कर ली। यह तथ्य जगजाहिर है कि प्रतिवर्ष अरबों रुपये सभी को अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा के संकल्प को दोहराते हुए खर्च कर देने के बाद, आज आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में 75 वीं वर्षगांठ मनाते हुए भी वास्तविक धरातल पर हम कहां तक पहुँच पाए हैं। आज शिक्षा व ज्ञान के विस्फोट ने मनुष्य के मस्तिष्क को उद्वेलित कर दिया है। इस उद्वेलन को सार्थक दिशा देने हेतु शिक्षण प्रणाली की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है।

शिक्षण प्रणाली-

शिक्षण प्रणाली शब्द के श्रवण से ऐसा प्रतीत होता है मानो शिक्षक के लिए किसी एक प्रणाली का चयन करके शिक्षण करवाने का मार्ग अत्यंत सुगम है। शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के दौरान भावी अध्यापकों को विभिन्न शिक्षण प्रणालियों के विषय में विस्तार से समझाने के साथ ही विविध प्रणालियों के विषय में भी पर्याप्त ज्ञान दिया जाता है।

एक प्रशिक्षक होने के नाते मैं ये अनुभव करता हूँ कि चाहे भावी अध्यापक कहें या न कहें, लेकिन उसके मस्तिष्क में सबसे बड़ा व जटिल प्रश्न यही होता है कि जो ये इतनी शिक्षण प्रणालियां हमें प्रशिक्षण के दौरान सिखाई या समझाई गयी हैं, उनमें से कौनसी सबसे अच्छी है तथा किसका प्रयोग मुझे शिक्षण में करना है ?

इस विषय पर अनेक अनुसन्धान हो चुके हैं, असंख्य अभी प्रक्रियाधीन हैं। जिनके निष्कर्ष स्वरूप विविध शिक्षण प्रणालियां आज शिक्षा को पुष्ट करने हेतु समुपलब्ध हैं, जिनके आश्रयण से एक शिक्षक अपने कर्म पथ पर अग्रसर होता है।

मूल समस्या-

शिक्षण को हम चाहे जो भी अर्थ एवं परिभाषा प्रदान कर दें, चाहे कितनी ही प्रणालियों की खोज कर लें, लेकिन यह बात बिल्कुल स्पष्ट एवं प्रमाणित है कि किसी भी शैक्षिक परिस्थिति में शिक्षण प्रक्रिया की शुरुआत करने और उसे नियोजित कर आगे बढ़ाने का श्रेय एक शिक्षक को ही जाता है। हम विभिन्न माध्यमों से सूचनात्मक ज्ञान तो प्राप्त कर सकते हैं, पर बिना शिक्षक के शिक्षण की कल्पना करना भी आकाशीय पुष्प की ही भांति है।

इस सन्दर्भ में आमिर खान की एक हिंदी मूवी (तारे ज़मीं पर) का जिक्र करना यहां लाजमी होगा- बच्चा विद्यालय जाता है, वहां सभी प्रशिक्षित शिक्षक विभिन्न शिक्षण प्रणालियों के ज्ञान से अभिसिंचित होने के साथ ही प्रयोगदक्ष भी हैं तथा विद्यालय का वातावरण भी अच्छा है। परंतु इतना होने के बावजूद भी वे उस बच्चे के दिमाग में अपनी ज्ञान गंगा की एक दो बूंद भी बमुश्किल नहीं उतार पाते हैं, बल्कि उसे नालायक, नाकारा, उद्दंड जैसे अलंकारों से नवाजकर उसके भविष्य की इतिश्री कर देते हैं। जबकि हर बच्चा अनेक संभावनाओं से परिपूर्ण होता है, केवल एक शिक्षक द्वारा तराशकर मूर्तरूप देने की आवश्यकता होती है।

यहां सबसे बड़ा सवाल यही खड़ा होता है कि विविध शिक्षण प्रणालियों के ज्ञान से ओत प्रोत वे शिक्षक उस बच्चे तक, उसके दिलो दिमाग तक क्यों नहीं पहुंच पाए? उनको जो प्रणालियां सिखाई गयी थी, क्या उनका उपयोग केवल शिक्षक प्रशिक्षण की परीक्षा उत्तीर्ण करने तक ही था ? क्यों वे हर बच्चे के अंतर्मन तक उतर पाने में सफल नहीं हो पा रहे थे ? ये चन्द सवालात हैं जो उस मूवी के पात्रों के माध्यम से वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तथा शिक्षक समाज पर उठाये गए हैं, जो कि किसी हद तक जायज भी हैं। मेरी बात को अन्यथा न लिया जाये लेकिन यह वर्तमान भारत की वास्तविकता है।

वर्तमान भारतीय परिदृश्य में नींव कही जाने वाली विद्यालय शिक्षा की बात करें तो - एक रिक्शा चलाने वाला अत्यंत गरीब व्यक्ति भी अपनी संतान को एक लाख रुपये तक वेतन पाने वाले सरकारी विद्यालय के शिक्षक से पढ़वाने की बजाय प्रायः प्रतियोगिताओं में विफल होकर मजबूरन प्राइवेट स्कूल की दस बीस हजार की नौकरी करने वाले शिक्षक से पढ़वाना ज्यादा पसंद करता है। क्या और कहाँ कमी है....? शिक्षा प्रणालियों की चर्चा के दौरान यह आत्मावलोकन करने की नितांत आवश्यकता है।

आज हम पैसा खर्च किये जा रहे हैं, पर उस पैसे का सदुपयोग हो रहा है कि नहीं ये नहीं देखते। कहने को तो आज हमने **RTE** (शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009) दे दिया, पर उसके अंदर की हकीकत को कभी झांककर देखने का प्रयास ही नहीं करते। एक कहावत याद आती है - '**बिल्ली को देख कबूतर तो कर लेगा आँखें बंद पथिक**,

तू तो इंसान कहाता है इतना नादान नहीं होगा.........'

कब तक हम आँखें मूंदकर बैठे रहेंगे, बड़े बड़े पाँच सितारा होटलों में बैठक करके इतिश्री करते रहेंगे ?

आदर्श शिक्षणप्रणाली-

पूर्वोक्त मूवी के दूसरे दृश्य में रामशंकर निकुम्भ (आमिर खान) के रूप में एक ऐसा शिक्षक मिलता है जो उस डरे सहमे, घर से जबरदस्ती बाहर भेज दिए बच्चे के दर्द को अनुभव कर, उसके दिल तक पहुंचकर उस पुरानी कहावत को चरितार्थ करता है -

गुरु कुम्हार शिशु कुम्भ है, घड़ घड़ काढ़ै खोट।
भीतर हाथ पसार दे, बाहेर बाहे चोट।।

वह उस बच्चे को आतंरिक सम्बल एवं विश्वास देता है, उसका हाथ पकड़कर उसे दौड़ के मैदान में लाता है। उसकी बैसाखी बनकर उसमें दौड़ने का विश्वास भरता है और उसे एक फिसड्डी बच्चे से स्कूल की मैगजीन के कवर पेज तक पहुंच जाने वाला होनहार बच्चा बनाने का सूत्रधार बनता है।

मैं केवल उस शिक्षण प्रणाली में विश्वास नहीं करता जो हमें शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान रटवाई गयी थी, बल्कि मैं उस प्रणाली का पक्षधर हूँ जो मैंने विगत 14 शैक्षणिक वर्षों में उन गरीब माता पिता के सपनों को लेकर मेरी कक्षा में तैयार हो रहे बच्चों की आँखों में जो समंदर देखा है, उस समंदर को अनुभव करने की प्रणाली में विश्वास करता हूँ। मेरे हिसाब से हमने यदि बच्चे के अन्तर्मन की भावना को पढ़ना सीख लिया, उसकी आँखों से उसके भावों को ग्रहण करना जान गये, उसकी मुस्कराहट के पीछे के दर्द का अनुभव कर लिया तो मैं समझता हूँ हम उसे बिल्कुल सही दिशा में ले जा पायेंगे। इन अर्थों में वही दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शिक्षण प्रणाली होगी।

मेरा मानना है -

शिक्षणवृत्तिं स्वीकृत्य यो न पाठयति निष्ठया।
न सः मोक्षमवाप्नोति जन्मजन्मान्तरेष्वपि।।

किसी भी कारण से हो लेकिन जो शिक्षक बन गया, जिसने वृत्ति के रूप में शिक्षण को चुन लिया लेकिन पूरी निष्ठा से बच्चों का निर्माण नहीं किया, ऐसे शिक्षक की जन्म जन्मांतर तक भी मोक्ष नहीं हो सकती है। क्योंकि शिक्षक को निर्माता- सृजनकर्ता कहा गया है।

निष्ठा का अर्थ यहां उससे है जो हम स्वयं अपनी संतति के निर्माण के लिए रखते हैं। अर्थात हम अपने स्वयं के बच्चों को जिस प्रकार उत्तम तरीके से तैयार करना चाहते हैं, ठीक उसी प्रकार हमारे समक्ष विद्यमान अपने मानस पुत्रों (विद्यार्थियों) के निर्माण की निष्ठा होनी चाहिए। और यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो अवश्य ही हम में अथवा अधिकाधिक हमारी आने वाली दो पीढ़ियों में कोई शारीरिक अथवा सामाजिक विकार उत्पन्न होने की प्रबल संभावना रहती है। जिसके उदहारण हम हमारे आसपास के परिवेश में सहजता से खोज सकते हैं।

एक बार पुनः आमिर खान की ही मूवी- 'थ्री इडियट्स' का जिक्र करना यहाँ उचित होगा। यंत्रीकरण के युग की इस आपा धापी में हम बच्चों का मशीनीकरण करने के मार्ग पर अग्रसर होते दिखाई देते हैं। बच्चे की भावनायें व चिंतन क्या है, इससे हम कम ही सरोकार रखते हैं। बस उसके दिमाग में किताबी ज्ञान को ठूँस देना चाहते हैं, जिसके चलते उसके व्यावहारिक उपयोग की परवाह भी हम कमोबेस नहीं करते (मूवी का पात्र चतुर्लिंगम उर्फ़ साइलेंसर) हैं।

राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 का मूलभाव एवं शिक्षाप्रणाली-

शिक्षानीति के दस्तावेज में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि **"शिक्षक वास्तव में बच्चों के भविष्य को आकार देते हैं, अतः हमारे राष्ट्र के भविष्य का निर्माण भी करते हैं। इस नेक योगदान के कारण ही शिक्षक समाज के सर्वाधिक सम्मानित सदस्य थे और सिर्फ सबसे अच्छे विद्वान ही शिक्षक बनते थे।"**

अतः आज आवश्यकता है शिक्षकों द्वारा समय की आवश्यकतानुसार समाज को सुदृढ़ता देने वाले मूल्यवान नागरिकों के निर्माण में सक्षम शिक्षा प्रणालियों के आश्रयण की, जो अग्रांकित बिंदुओं के आधार पर बच्चों को उपयुक्त दिशा प्रदान कर सकें-

1. विद्यार्थियों की भावनाओं को समझना।
2. विद्यार्थियों के नैतिक, चारित्रिक एवं मौलिक विकास को प्राथमिकता देना।
3. शिक्षण की पूर्वक्रिया, अन्तःक्रिया तथा उत्तर क्रिया का प्रायोगिक अनुसरण।
4. बच्चों को अपने विचार रखने का पर्याप्त अवसर देना।
5. सर्वांगीण विकास हेतु अपेक्षित गतिविधियों का अनुकरण।
6. अन्तःक्रिया तथा पुनर्बलन।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. राष्ट्रीय शिक्षानीति- 2020 मूल दस्तावेज।
2. गाँधी, मोहनदास करमचन्द (2008). मेरे सपनों का भारत।